फोटो– पुरुषोत्तम

लिखी जा रही है 'मम्मी जब बच्ची थीं'

व्यक्तित्व का विकास आजीवन चलता रहता है और साहित्य से जुड़ाव हमें सहज एवं संवेदनशील बनाता है। लॉकडाउन के दौरान मेरी बेटी ने ढेर सारा बाल साहित्य पढ़ा और इस तरह उसका पढ़ने-लिखने से नाता टूटा नहीं। ऑनलाइन की ऊब से भी बाल साहित्य ने उसे काफी हद तक बचाये रखा।

– डॉ. रुचि श्री

जब से ऑनलाइन कक्षाओं का दौर शुरू हुआ तो 'डिजिटल डिवाइड' का मुद्दा काफी चर्चा में रहा। मसलन, जिन घरों में स्मार्टफोन नहीं, वे बच्चे कक्षा कैसे करें? या फिर अगर एक ही स्मार्टफोन हो और बच्चे दो हों तो एक और फोन खरीदने की बाध्यता हो जाती है। इन दो सालों में बच्चे मुश्किल से तीन महीने शारीरिक रूप से स्कूल गए और अब फिर से ऑनलाइन कक्षाओं का दौर जारी है। यह लेख मेरे व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है जिसमें एक प्राध्यापिका और माँ की भूमिका में युवा वर्ग और एक छोटी बच्ची के नजरिये से 'लर्निंग लॉस' को समझने और उसे कम करने में साहित्य की भूमिका पर नजर डालने का प्रयास है।

2020 में जब कोरोना का पहला दौर शुरू हुआ तब मेरी बेटी मानवी पांच साल की थी और स्कूल जाने पर पाबन्दी होने से मैंने उसे व्यस्त रहने के क्रम में उसका ध्यान बाल साहित्य में लगाने का प्रयास किया। उसे बहुत सारी किताबें, पत्रिकाएं पढ़ने को दीं। इकतारा प्रकाशन की साइकिल और प्लूटो जैसी पत्रिकाएं बड़े लोगों के लिए भी उतनी ही ज्ञानवर्धक हैं जितनी बच्चों के लिए। इनके माध्यम से विश्व साहित्य से परिचय का अच्छा मौका मिलता है। इसी तरह प्रयाग शुक्ल जी की कविताएं एवं सोपान जोशी की गाँधी पर दो किताबें एक था मोहन और बापू की पाती को पढ़ना रुचिकर था।

मुझे लगता है कि व्यक्तित्व का विकास आजीवन चलता रहता है और साहित्य से जुड़ाव हमें सहज एवं संवेदनशील बनाता है। स्नातकोत्तर (राजनीति विज्ञान)

के छात्र–छात्राओं को पढ़ाने के क्रम में महसूस हुआ कि उनमें से बहुत कम ही अपने विषय से इतर कुछ पढ़ते हैं। ऐसे में अंतरविषयी ज्ञान को बढ़ावा देने के क्रम में मैंने उन्हें एक 'रीडिंग क्लब' बनाने का सुझाव दिया। हर महीने एक पुस्तक का पाठ और उस पर चर्चा की कोशिश रहती है। समय–समय पर हम लोग कक्षा में सामूहिक पाठ भी करते हैं। अनुपम मिश्र के लेखों का संकलन 'साफ माथे का समाज' साथ पढ़कर बच्चे काफी लाभान्वित हुए। ऑनलाइन क्लास के दौरान भी हम लोग इस क्रम को जारी रख पाते हैं।

हाल में पढ़ी तीन किताबें जिन्होंने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया, वे हैं चिंगीज आइत्मातोव की 'पहला अध्यापक', ज्यां गिओने की 'जिसने उम्मीद के बीज बोये' और अलेक्सांद्र रस्किन की 'पापा जब बच्चे थे'. पहला अध्यापक 'दुइशेन' नामक उपन्यास (सोवियत साहित्य) का भीष्म साहनी द्वारा अनुवाद है। यह कहानी एक व्यक्ति की हिम्मत की है जो स्वयं बहुत पढ़ा–लिखा नहीं था पर चाहता था कि ज्यादा से ज्यादा बच्चे पढ़ सकें। उसने न सिर्फ नाममात्र की सुविधा वाला एक स्कूल खोला बल्कि घर–घर जाकर लोगों से अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिए आग्रह भी किया। आल्तीनाई नामक अनाथ लड़की को भी पढ़ने का मौका मिल सका और पढ़ने की अदम्य इच्छा के बल पर वह छात्रवृत्तियों के सहारे कस्बे से बाहर गयी। आगे चलकर वह विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र की प्राध्यापिका बनी।

'जिसने उम्मीद के बीज बोये' महज 24 पन्नों वाली एक छोटी सी पर मन में घर करने वाली किताब है। यह एक अनपढ़ गड़रिये की कहानी है जो अपनी लगन से एक निर्जन क्षेत्र को क्रमशः बीज बोकर कुछ सालों में एक पथरीली पहाड़ी को हरा–भरा कर देता है। इसमें पाठ है–लगन और एकाग्रता का, सामूहिकता का, इंसानियत और दरियादिली का, सात्विक जीवन के महत्त्व का। यह किताब मशहूर ग्रीन क्लासिक है और मानवी के साथ इसे पढ़ने पर हम दोनों माँ–बेटी का पर्यावरण प्रेम तो बढ़ा ही, इसे पढ़कर मेरे छात्रों को भी बहुत अच्छा लगा। मेरी कोशिश रहती है कि जब भी कोई अच्छी किताब पढ़ूं तो कुछ और लोगों को भी उसे पढ़ने के लिए कहूं।

रस्किन की किताब 'व्हेन डैडी वाज अ लिट्ल बॉय' पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस द्वारा 'पापा जब बच्चे थे' नाम से अनुवादित पुस्तक है। इसमें छोटी–छोटी कहानियों से जीवन अनुभव के तौर पर सहज ढंग से कई महत्वपूर्ण सीखें दी गयी हैं। कुछ प्रसंग स्कूल के हैं तो कुछ खेल के मैदान से गलतियों से सीख लेने के। अपनी ताकत आजमाने की, नई भाषा सीखने की, चित्रकारी, लिखना, इत्यादि। भाषा सीखने में किस तरह लिखना, पढ़ना और बोलना तीनों ही साथ चलना जरूरी है। ऐसे में मजेदार कहानियां पढ़ना इस क्रम को रोचक बनाता है।

रीडिंग क्लब के साथ अध्यापन में दूसरा जारी प्रयोग है विद्यार्थियों को अंग्रेजी सिखाने का। वे हर दिन पांच नए शब्द का अर्थ सीखते हैं, वाक्य में उनके प्रयोग के साथ। साथ ही, अपनी दिनचर्या या फिर अपनी पसंद के किसी विषय पर सात से दस वाक्य लिखने की आदत बनाने जैसी कोशिश से उन लोगों को काफी लाभ मिला है। इधर घर पर अब मानवी सात साल की हो गयी हैं और हाल फिलहाल फूल और तितली जैसे विषयों पर छोटी कविताएं लिखने लगी हैं। काफी समय से रात को सोने से पहले वे मेरे बचपन की बातें कहानी के तौर पर सुनती रही हैं और हाल में 'पापा जब बच्चे थे' पढ़ने का असर कहिये, अब 'मम्मी जब बच्ची थी' लिखने की तैयारी कर रही हैं। कुल मिलाकर, साहित्य पढ़ना और अपने साथ अधिक से अधिक पढ़ने वालों को जोड़ना प्रेरणादायी है।

(लेखिका तिलका माझी भागलपुर विश्वविद्यालय, बिहार में राजनीति शास्त्र विभाग में प्राध्यापिका हैं।)

शिक्षक सृजन- कविता

फूटे हैं आमों में बौर
फूटे हैं आमों में बौर,
कोयल का ये बनता ठौर।
झूमे देखो डाली-डाली,
गाये कोयल हो मतवाली।
गुन गुन भौंरे गीत सुनाते,
धीरे-धीरे रस पी जाते।
सबके मन को हैं ये भाते,
फलों से पेड़ जब लद जाते।
आम फलों का राजा है,
बनता इससे माजा है।
फ्रूटी हमको भाती है,
जब भी गर्मी आती है।

–इंदु कोठारी
राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, बौराड़ी, चम्बा, टिहरी गढ़वाल